"तुलसी"

की व्यावसायिक खेती

औषधि की जननी

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

परिचय

भारत में तुलसी का पौधा धार्मिक एवं औषधीय महत्व का है। इसका वानस्पतिक नाम ऑसीमम सैंक्टम है और इसे हिंदी में तुलसी, संस्कृत में सुलभा, ग्राम्या, बहुभंजरी एवं अंग्रेजी में होली बेसिल के नाम से जाना जाता है। लेमिएसी कुल के इस पौधे की विश्व में 150 से ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसकी मूल प्रकृति एवं गुण एक समान हैं।

प्रमुख प्रजातियाँ

1)कर्पूर तुलसी (*Ocimum klimendscharicum*)- यह एक अमेरिकन प्रजाति की तुलसी है, जिसकी उत्पत्ति अमेरिका में हुई है | इसमें निकलने वाली पत्तियों का इस्तेमाल चाय को खुशबूदार बनाने में किया जाता है | इसके पौधों को कपूर बनाने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है | इसके पौधों की लम्बाई दो से तीन फ़ीट पाई जाती है, जिसमें निकलने वाली पत्तियां हरे रंग की औऱ फूल बैंगनी भूरे होते है |

2)रामा तुलसी (*O. basilicum*)- 1)रामा तुलसी की इस क़िस्म को गर्म जलवायु में उगाने के लिए तैयार किया गया है| भारत के दक्षिणी राज्यों में इसे उगाया जाता है | इसमें निकलने वाले पौधों की लम्बाई दो से तीन फ़ीट पाई जाती है | इस क़िस्म के पौधों की पत्तियों का रंग हल्का हरा औऱ फूल बिल्कुल सफ़ेद होते है | इसके पौधों में कम खुशबु पाई जाती है, तथा इन्हे मुख्य तौर पर औषधियाँ बनाने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है |

3)श्याम या कृष्ण तुलसी (*O. sanctum Linn.*)- श्याम या कृष्ण तुलसी इस तुलसी की क़िस्म को काली तुलसी के नाम से भी कहते है | इस क़िस्म के पौधों में निकलने वाली पत्तियों का रंग हल्का जामुनी तथा फूल हल्के बैंगनी रंग के होते है | इसके पौधे तीन फ़ीट लम्बे होते है,कफ की बीमारी में इसकी पत्तियों का इस्तेमाल किया जाता है|

4)शुक्ल तुलसी (O. americanum Linn.)- 1)तुलसी की इस क़िस्म को सब्जी को खुशबूदार बनाने में करते है | इसके पौधे दो फ़ीट लम्बे होते है, जिनकी पत्तियों का आकार सामान्य होते है | भारत में इसे बंगाल औऱ बिहार राज्यों में उगाया जाता है |

5)अमृता तुलसी (*O. gratissimum Linn)*- तुलसी की यह क़िस्म पूरे भारत में उगाई जाती है | इसके पौधों में अधिक शाखाएँ निकलती है, जिसमें निकलने वाली पत्तियों का रंग जामुनी होता है | तुलसी की इस क़िस्म को डायबिटीज, दिल की बीमारी, पागलपन, कैंसर औऱ गठिया रोग के उपचार में उपयोग करते है|

औषधीय उपयोग

तुलसी अत्यधिक औषधीय उपयोग का पौधा है। जिसकी महत्ता पुरानी चिकित्सा पद्धति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति दोनों में है। तुलसी के पौधों में रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रबल होती है | इसका सेवन कर सर्दी-जुकाम, बुखार, खांसी, श्वांस सम्बन्धी रोग औऱ दांत संबंधित रोगो से छुटकारा पाया जा सकता है | वर्त्तमान में इससे अनेकों खाँसी की दवाएँ, साबुन, हेयर शैम्पू आदि बनाए जाने लगे हैं। कॉस्मेटिक्स प्रोडक्ट्स औऱ दवाइयों को बनाने वाली कंपनियों में तुलसी की अधिक मांग होती है| जिससे किसान भाई तुलसी की खेती कर कम समय में अच्छा लाभ कमा सकते है | जिससे तुलसी के उत्पाद की मांग काफी बढ़ गई है। मांग की पूर्ति बिना खेती के संभव नहीं हैं। यदि आप भी तुलसी की खेती करना चाहते है, तो इस लेख में आपको तुलसी की खेती कैसे करें और कहां बेचे तथा तुलसी के भाव से जुड़ी जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है |

फसल की आयु

तुलसी की खेती साधारणतः 1 वर्ष की होती है जिसमे 3-3 महीने के अंतराल से इसके पत्तो को काटा जाता है। एक साल में तुलसी की चार बार कटाई होती है। जिसमे पत्ते और फूल (मंजिरी) भी होते है।

मृदा व जलवायु

इसकी खेती, कम उपजाऊ जमीन जिसमें पानी के निकास का उचित प्रबंध हो, ऐसी मिटटी अच्छी होती है बलुई दोमट जमीन इसके लिए बहुत उपयुक्त होती हैं। इसके लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय दोनों तरह की जलवायु उपयुक्त है।

खेत की तैयारी औऱ उवर्रक की मात्रा

तुलसी का पूर्ण विकसित पौधा 1 वर्ष तक पैदावार देता है| इसके लिए खेत को अच्छे से तैयार कर लेना चाहिये| सबसे पहले खेत की गहरी जुताई कर देनी चाहिये | जुताई के बाद खेत को कुछ समय के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दे | इसके बाद खेत में गोबर की खाद डालकर रोटावेटर से जुतवा दे | इससे खेत की मिट्टी में गोबर की खाद अच्छे से मिल जाएगी | इसके बाद खेत में पानी लगाकर पलेव कर दिया जाता है| पलेव के बाद जब खेत की मिट्टी ऊपर से सूखी दिखाई देने लगे तब रोटावेटर चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा बना दे | खेत की मिट्टी के भुरभुरा हो जाने के बाद उसमे पाटा लगाकर खेत को समतल बना दे |गोबर की खाद की जगह आप कम्पोस्ट खाद का भी इस्तेमाल कर सकते है |

बीज

प्रति एकड़ तुलसी की खेती के लिए 6 किलो बीज की आवश्यकता होती है। तुलसी का बीज आकर में छोटा होने के वजह से उसे जमीन में फेकते समय उसमे 10 :1 में मिटटी या रेत मिलाये। उदहारण- अगर तुलसी का बीज 1 किलो है तो मिटटी या रेत 10 किलो मिलाये।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

पौधों की रोपाई का सही समय औऱ तरीका

तुलसी के पौधों की रोपाई पौध के रूप में की जाती है | इसके लिए पौधों को किसी सरकारी रजिस्टर्ड नर्सरी से खरीद लेना चाहिये | नर्सरी से ख़रीदे गए पौधे बिल्कुल स्वस्थ होने चाहिये | इसके पौधों की रोपाई समतल औऱ मेड़ दोनों ही जगहों पर की जा सकती है | मेड़ पर रोपाई करने से पहले खेत में एक फ़ीट की दूरी रखते हुए मेड़ को तैयार कर लिया जाता है | इसके बाद इन पौधों को सवा फ़ीट की दूरी पर मशीन के माध्यम से लगाया जाता है |

यदि आप समतल भूमि में पौधों की रोपाई करना चाहते है, तो उसके लिए आपको खेत में पंक्तियो को तैयार कर लेना होता है | इन पंक्तियों को डेढ़ से दो फ़ीट की दूरी में तैयार किया जाता है, तथा इसमें लगाए गए पौधों के बीच में 40 सेमी की दूरी अवश्य रखे | तुलसी के पौधों की रोपाई के लिए अप्रैल का महीना सबसे उपयुक्त माना जाता है |

सिंचाई

तुलसी के पौधों की रोपाई सूखी भूमि में की जाती है, इसलिए पौधों की रोपाई के तुरंत बाद उसकी पहली सिंचाई कर दी जाती है| तुलसी के खेत में नमी बनाये रखने के लिए 4 से 5 दिन के अंतराल में सिंचाई करते रहना चाहिये| तुलसी के पौधों को एक वर्ष में 10 से 12 सिंचाई की आवश्यकता होती है | बारिश के मौसम में इसके पौधों की सिंचाई 15 से 20 दिन के अंतराल में की जाती है|

खरपतवार नियंत्रण

तुलसी की खेती औषधी के लिए जाती है, इसलिए इसकी फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए | खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई – गुड़ाई विधि का इस्तेमाल किया जाता है | इसके पौधों की पहली निराई पौध रोपाई के डेढ़ महीने बाद की जाती है | पहली निराई के एक महीने के अंतराल में पौधों की दूसरी औऱ तीसरी निराई कर देनी चाहिए |

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

पौधे की देखभाल और रोग नियंत्रण

पत्ता लपेट सुंडी: यह सुंडिया पत्तों, कली और फसल को अपना भोजन बनाती है| यह पत्तों की सतह पर हमला करते हैं और उसे मरोड़ देती है|
तुलसी के पत्तों का कीट: यह पत्तों को खाते है और अपना मल छोड़ते हैं जोकि पत्तों के लिए बहुत नुकसान-दायक है| शुरुआत में पत्ते मुड़ जाते है और सूख जाते है|
पत्तों के धब्बे: इस बीमारी से फंगस जैसा पाउडर पत्तों और पौधे को प्रभावित करता है|
पौधों का झुलस रोग: यह फंगस की बीमारी है जो बीजों और नए पौधों को नष्ट कर देती है|
जड़ गलन: घटिया निकास के कारण इस पौधे की जड़ें गल जाती है| इसके लिए फाईटो सेनेटरी विधि का प्रयोग करें|

कटाई

जब पौधे में पूरी तरह से फूल आ जाए तथा नीचे के पत्ते पीले पड़ने लगे तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। रोपाई के 10-12 सप्ताह के बाद यह कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी तुड़ाई पूरी तरह से फूल निकलने के समय की जाती है| पौधे को 15 सेमी. जमीन से ऊपर रखकर शाखाओं को काटें ताकि इनका दोबारा प्रयोग किया जा सकें| भविष्य में प्रयोग करने के लिए इसके ताज़े पत्तों को धूप में सूखाया जाता है|

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

प्रति एकर कुल खर्चे- 1 साल

ब्योरे	कार्य	क़ीमत
जमीन तैयारी	गहरी जुताई और समतलीकरण	4,000
जैविक खाद	जैविक कीटनाशक, ग्रोथ बूस्टर ई.	5,000
बीज	5 किलो @ रु.1000/- प्रति किलो	5,000
निंदाई/ गुड़ाई	खरपतवार निकालना	4,000
कटाई	कटाई, सुखाना आदि.	5,000
अन्य खर्चे	सिंचाई, परिवहन ई.	10,000
संपूर्ण खर्च (1 साल)		**33,000/-**

प्रति एकर कुल आय- 1 साल

पैदावार	बायबैक कीमत	कुल कीमत
सूखे पत्ते (4000 किलो)	रु.50 प्रति किलो	रु.200,000/-
कुल खर्चे (1 वर्ष)		**रु.33,000**
शुद्ध आय/ नफ़ा (1 वर्ष)		**रु.167,000**

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

CLICK-N-GROW AGROVENTURES PVT. LTD.

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

eKisanZone Farmer's e-Buddy | MITCAD | Contract Farming | KisanSAT AGRO ADVISORY SERVICES | Agri Export Grow Farmer, Grow india

INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE

CONTACT DETAILS

Corporate Office Maharashtra
C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Opp New SP Office, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001

Ms. Karishma Srivastava
+91-7028301210

Mr. Bhushan Deshmukh
+91-9096338660

Mr. Amol Khandare
+91-7775008660,

info@ekisanzone.com

info.clickngrow@gmail.com

ekisanzone1@gmail.com

www.ekisanzone.com

www.kisansat.com